कर्म प्रारब्ध

भारतवर्ष में जिनका जन्म होता है, वे अधिकांश इन शब्दों का प्रयोग करते हैं - आत्मा, कर्म इत्यादि। हिन्दु हैं, भारत में जन्म है, तो ये शब्द तो चलते ही रहते हैं। और 'कर्म' - इसके बारे में भी हम बचपन से ही सुनते आते हैं, बोलते आते हैं। पर जिस प्रकार से हमें 'आत्मा' के गहरे रहस्य पता चले थे, शायद आज 'कर्म'..., जिसको हम इतना सामान्यतः प्रयोग कर देते हैं शब्द को, इसके कुछ गूढ़ रहस्य हमें समझ आएँ। इस..., इस प्रार्थना से निताईचाँद के चरणों में, हम आज का सत्र प्रारंभ करेंगे।

'शरीर' का निर्माण कर्म से होता है। यह शरीर क्या है? कर्मफल! कर्मफल है शरीर। अर्थात् शरीर का निर्माण कर्म से होता है। इस बात को हम..., और सूक्ष्मता से हमें जानना चाहिए, समझना चाहिए ये सब क्या होता है, कैसे होता है? सभी जीवों के..., जो संसार मे हैं, उनके अनन्तानन्त जन्म हो चुके हैं। अनन्त-अनन्तानन्त जन्म। अनन्तानन्त जन्मों में कितने कर्म? अनन्त-अपार कर्म, कर्मों का ढेर, ढेरों-ढेर है। कर्मों के गोदाम भरे हुए हैं। अनन्तजन्म ~ अनन्तकर्म, गोदाम भरे हुए हैं।

तो किसी जीव को भी कोई कर्मफल क्यों प्राप्त होता है? यह शरीर है-कर्मफल है, मतलब? यह set of karmas भगवान् देते हैं इस जन्म में भोगने के लिए, हमारे total karmas में से। Total karmas को कहा जाता है - 'संचित कर्म'। संचित ! जैसे होता है न हमारा संचित धन है। आपकी कितनी property है? जी मेरी property है १५ करोड़। अच्छा..., उसमें से अभी मैं निकाल कर लाया हूँ ५० हज़ार या ५ हज़ार या ५ लाख..., जो भी। तो total कर्म जो हैं..., **संचित कर्मों में से जो एक जीवन में प्राप्त होता है मनुष्य को, उसे प्रारब्ध कहते हैं।** ये जो हैं हमारे कर्मफल इसे प्रारब्ध कहते हैं। यह कैसे तय होता है? यह ऐसे तय होता है कि जीवन में -

"यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः।।"

(गीता-८.६)

मनुष्य जीवन में जो आखिरी क्षण जो हम कर्म करते हैं, जो हमारा स्मरण होता है, उसके अनुसार अगला देह प्राप्त होता है। मनुष्य जीवन में आखिरी..., जब मनुष्य जीवन खत्म होता है तो हमारे सारे प्रारब्ध जो होते हैं वो खत्म हो जाते हैं। सिर्फ अंतिम श्वास में जो स्मरण होता है, जिस चीज़ का, वस्तु का, व्यक्ति का, जो संस्कार का स्मरण होता है, उसके अनुसार अगला शरीर..., देह हमें प्राप्त होता है।

अच्छा, कर्म कौन से प्राप्त होते हैं? क्योंकि हमारे कर्मों के तो godowns के godowns भरे हुए हैं, मिलता कितना सा है उसमें से? Just ज़रा सा, इस शरीर के

लिए। तो अंतिम संस्कार जो होता है हमारा, भगवान् सबसे पहले उसे सार्थक करना चाहते हैं।

हमारे तो..., जो कर्म हैं वो क्या हैं? हमारी अनन्त इच्छाएँ। पर भगवान् कौन सी सार्थक करना चाहते हैं सबसे पहले? अंतिम इच्छा। और अंतिम इच्छा के अनुसार जो आपका संस्कार है वो आपके अनेक कर्मों के ढेर में से उसको जो attract करता है, खींच कर ले आते हैं कर्म, उसके अनुसार अगला शरीर मिलता है। भगवान् की सबसे पहली इच्छा..., चेष्टा क्या होती है? आखिरी..., अंतिम जो संस्कार है, उस हिसाब से जन्म देना। Second, कर्मों को देखना और फिर उसके अनुसार डाल देना। यह है secret, इस प्रकार से सब होता है।

तो अगर किसी का..., किसी ने साधना कर है जीवन भर में, तो उसे पूरी तरह नहीं कर पाया, कुछ किया है, तो अंत में भी कौन सा भाव रहेगा? साधक का भाव। तो फिर अगला जीवन कौन सा मिलेगा? साधक का मिलेगा। मनुष्य का मिलेगा, साधक का मिलेगा। फिर वही वाले संस्कार जो होंगे वो साथ में, कर्म के..., जो कर्म होंगे, वे डाल दिये जाएँगे और एक यह शरीर मिल जाएगा।

कभी भी किसी मनुष्य को जन्म मिल रहा है, उसी से, उसके जन्म मिलते ही उसके सैंकड़ों रिश्ते जो होंगे - माता कौन? पिता कौन? पत्नी कौन? बेटी कितना? बेटा कितना? यह सब निर्धारित होता है। एक बारी भगवान् ने प्रारब्ध decide कर लिया, तो सब निर्धारित हो जाता है। सब कुछ - आपकी health कैसी रहेगी, आपकी wealth कैसी रहेगी, आपके किनसे सम्बन्ध रहेंगे, आप क्या कार्य करेंगे, व्यापार, service, housewife, पढ़ाई, health..., सब कुछ decide होता है।

कई बार एक व्यक्ति शरीर त्यागता है, तो एकदम से तुरंत जो उसके उपयुक्त माता-पिता होने चाहिए या उपयुक्त दोस्त circle होना चाहिए, वो एकदम से नहीं available होते, उस प्रकार के जीव ही पैदा नहीं हुए होते, तो क्या होता है फिर? तो क्या होता है? कि अभी आपकी जो train है वह आई नहीं है, तब तक आप क्या करोगे? Junction पर wait करोगे। वह junction को कहा जाता है - पितृलोक, वहाँ पर wait किया जाता है, जब तक..., कई-कई बारी सौ-सौ साल तक wait करना होता है..., कई बारी थोड़े से साल तक wait करना, जब तक उपयुक्त..., परिस्थिति उत्पन्न व्यक्ति न हो जाएँ, जिसमें हमें पुनः जो हमारे कर्मफल व अंतिम संस्कार जो होते हैं उसके अनुसार। ये पितृलोक में होता है।

कई बार एक कर्म ही इतना अच्छा, एक कर्म ही इतना भयंकर अपकर्म हो जाता है, एक क्षण के अंदर ही, कि उसके परिणाम जन्मों-जन्मों तक भोगने पड़ते है। एक क्षण

में इतना भयंकर अपकर्म हो जाता है - 'अपराध'। जो वैष्णव अपराध है, इसका जो फल है कई जन्मों तक मिलता है, कई बार। और कई बारी एक ऐसा सत्कर्म हो जाता है..., अच्छा, जिसका फल भी बहुत लम्बे समय तक..., कल्पांत तक मिलता है, कल्पों तक। तो एक क्षण का..., क्षण का जो कर्म है, वह कोई भी सामान्य बात नहीं है, क्यों? बहुत बड़ा कार्य कर सकते हैं अच्छा और बहुत बड़ा निम्नता में जाने का कार्य भी कर सकते हैं।

हमारी जो अनन्त इच्छाएँ होती हैं, वो हमें किस प्रकार का जीवन जीने के लिए मजबूर कर देती हैं कई बार? पशु का जीवन। है कि नहीं? इच्छाएँ तो पशु की भी इच्छाएँ होती हैं, वो अपनी इच्छा पूर्ति, हम अपनी इच्छा पूर्ति। तो, it's very..., जैसे आपने सुना होगा कई बार कि- 'इंसान है न, तो इंसान बन के रह।' सुनते हैं न? कभी किसी को..., कुत्ते को बोला जाता है- 'कुत्ता है न कुत्ता बन के...'? कभी नहीं बोला जाता। किसी पक्षी को बोला जाता है- 'तू पक्षी है, तू पक्षी बन के रह' या 'मछली है, तू मछली बन के'? नहीं! वो मछली है, तो मछली ही बन के रहेगा। तो पक्षी है, तो पक्षी बन के रहेगा। पर इंसान तब तक इंसान बन के नहीं रहेगा, जब तक वह सत्संग में नहीं रहेगा। केवल सत्संग ही है, जो हमें मनुष्य की तरह जीवन जीने की कगार पर ला सकता है, अन्यथा इसका कोई उपाय नहीं है, सत्संग के अलावा। नहीं तो हम लोग..., हम इंसान के वेश में तो रहेंगे, पर...

जो हमारे संस्कार होते हैं..., जीवन के जो कर्म होते हैं..., वो हमें कई कार्य करने पर pressure कर सकते हैं, जीव को। पर ultimately free will जो होती है, वो जीव के पास होती है। वह pressure को accept करे या न करे।

देखिए, कर्मों का pressure है हमारे..., हमारी इच्छाओं का हमारे ऊपर, परंतु हमारे पास free will हमेशा है कि हम अपने मन की पुकार सुनेंगे कि शास्त्र की पुकार सुनेंगे। पुकार दो ओर से हमेशा आएगी - शास्त्र की ओर से, मन की ओर से। मन में है - unfulfilled desires और शास्त्र में है - कि क्या करना चाहिए? तो एक तरीके से सब..., एक तरीके से decided भी है कि आपको इतना-इतना सब कुछ मिलेगा, पर फिर भी free will भी simultaneously है। अगर free will नहीं होगा तो मनुष्य जीवन ही केवल कर्म योनि है, और किसी को कर्म योनि नहीं बोलते। Free will भी है, पर बद्ध भी हैं। प्रारब्ध की वजह से हम बद्ध हैं कि अमुक ही तुम्हारी पत्नी होगी, अमुक ही तुम्हारी..., इतनी तुम्हारी height होगी, इतना तुम्हारा पैसा होगा, इतने तुम्हारे बच्चें होंगे। इस सब से आप बद्ध हैं। पर बीच में..., इनके बीच में भावना कैसी करोगे, उसमें free हो। आप यह बद्ध हो कि इस घर में रहोगे, ठीक है? अब इस घर में रहकर आप क्या करते हो, ये आपके अंदर freedom, free will है।

जैसे मान लो आप धनी हो, दान देने का है, तो दान बहुत ही आदरपूर्वक भी दे सकते हो और ये ले... अह...हट..., ऐसे भी कर सकते हो। ये तो free will है आपके पास में। वही दान है, उसका अनन्त गुणा benefit है और उसका proper benefit नहीं मिलेगा।

मनुष्य की उन्नति का सबसे बड़ा कारण एकमात्र सत्संग है। सत्संग! अब ये सत्संग क्या होता है? सत् का संग। सत् क्या होता है? भगवान्। भगवान् के संग को ही सत्संग कहते हैं। तो जिनका हम संग कर रहें हैं, यदि उससे हम..., उनके द्वारा हमें सत् वस्तु ग्रहण नहीं हो पा रही, तो वह सत्संग नहीं है। तो हमें संग करने में बहुत ध्यान रखना है कि हम सत्संग ही करें। सत् मतलब भगवान्, भगवान् के संग को ही सत्संग कहते हैं; ऐसा नहीं कि भक्तों के साथ आप संग कर रहे हैं केवल। न! न !

जिस प्रकार से सबसे बड़ा कारण है मनुष्य के मनुष्यत्व का - सत्संग, उसी प्रकार से मनुष्य की अवनति..., गिरने का सबसे बड़ा कारण भी क्या है? असत्संग। असत् का संग करेंगे, तो सबसे ज़्यादा अवनति होगी..., पतन होगा। और असत्संग में भी क्या है सबसे बड़ा? Negativity सुनना..., निंदा सुनना। ये सबसे बड़ा कारण है व्यक्ति के पतन का - निंदा करना, निंदा सुनना।

Nectar of Instructions में केवल ग्यारह (११) श्लोक हैं। रूप गोस्वामी ने उपदेश का अमृत दिया हुआ है; केवल ग्यारह श्लोक, अगर समझ जाएँ और मान लें हम। उसमें बताया गया है - अगर संग करना हो, तो किसका संग करें। स्पष्ट बताया हुआ है। रूप गोस्वामी..., रूप मंजरी के हम अनुगत हैं। निंदा शून्य व्यक्ति का संग करना चाहिए। जो निंदा से रहित हो और गुरु की सेवा में रत हो, केवल उसी व्यक्ति का संग करना चाहिए। अगर इस प्रकार का संग नहीं मिलता तो भला है कि हम एक पिंजरे में शेर के साथ बैठ जाएँ अकेले। एक पिंजरे में हम दोनों बन्द हो, शेर और हम, परंतु खराब संग कभी न करें। शेर के साथ रहेंगे, हद से हद क्या होगा? शरीर का अंत होगा। हमारा..., गिरेंगे नहीं..., पतन नही होगा। परंतु, यदि हम निंदा श्रवण कर लेंगे, तो निश्चित पतन..., निश्चित पतन। निंदा सुनने के बाद जो कार्य करेंगे, वो तो अलग point है; निंदा सुनते ही पतन। सुनते ही!

खाना जैसे हम खाते हैं, हमनें कई महीनों एकदम first class खाना खाया हो अच्छे तरीके से, पर एक बार भी अगर contaminated खाना खाएँगे तो क्या होगा? उसी क्षण typhoid..., बीमारी उसी क्षण हो जाएगा। यह नहीं सोचना चाहिए- "मैं तो बहुत पुराना हो गया तो मैं..., मैं तो digest कर सकता हूँ।" कितनी भी अच्छी आपकी health हो, contaminated water आप digest नहीं कर सकते, उससे swine flu और क्या-क्या चीज़ होता है। These are air borne..., water borne diseases...,

Contamination जैसे ही गया - Gone ! और कितने लम्बे समय तक खराबी हो जाती है। तो ध्यान देना है इस बात पर कि संग बहुत..., निंदा कभी श्रवण न करें।

अब हमनें बताया कि प्रारब्ध..., एक होते हैं जीव के अपने प्रारब्ध, जिसके अनुसार उनका परिवार, धन, यश-अपयश, मान-सम्मान, शौहरत, कार्यक्षेत्र, ये सब निर्धारित होता है। अगर हम कर्म को और सूक्ष्मता से जानें तो एक होते हैं- व्यष्टि प्रारब्ध और एक होते हैं- समष्टि प्रारब्ध, कि societal प्रारब्ध भी होते हैं। जैसे कि दंगा होना, तो उसमें काफ़ी खराब लोगों का एक संगठन होगा, तो ही आप..., दंगा हो पाएगा, नहीं तो अन्यथा नहीं होगा। वो भी arranged होता है। उसी प्रकार से कोई बड़ी घटना होने वाली होती है, तो उसके लिए भी एक group होता है, जो भगवान् पहले से decide करते हैं कि इस प्रकार से होगा। जैसे जो criminal activities में हैं, उसमें ऐसा होता है कि कुछ एक प्रकार के goons, they are together... तो उसी प्रकार से अच्छे कार्य के लिए भी और बुरे कार्य के लिए भी एक समष्टि प्रारब्ध। भूकम्प आना, पूरे एक society..., society को लाभ या हानि होती है उससे।

तो एक होते हैं व्यष्टि प्रारब्ध, एक होते हैं समष्टि प्रारब्ध। जब भी कोई आंदोलन होना होता है, तो वो समष्टि प्रारब्ध की वजह से होता है न कि केवल व्यष्टि प्रारब्ध की वजह से।

जब हम कर्म की बात करते हैं, तो सामान्यतः हम व्यष्टि कर्म को ही सोचते हैं सिर्फ़। समष्टि प्रारब्ध को तो हम..., समष्टि कर्म को तो हम सोचते ही नहीं हैं कभी भी। जब कर्म को हम सूक्ष्मता से जानेंगे, तो समष्टि प्रारब्ध..., समष्टि कर्म को समझना भी बहुत ज़रूरी है।

Actually में कई-कई जगह में तो हमारा free will होता है और कई जगह में तो हम बिल्कुल henpecked..., एकदम..., you just cannot do anything about it..., इस प्रकार होते हैं। जैसे कहते हैं भगवान् की इच्छा के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता। ऐसा होता है कि कई क्षेत्रों में हम बिल्कुल एक बहुत बड़े महानाटक के यंत्र मात्र..., पात्र मात्र होते हैं सिर्फ, और कुछ नहीं। बहुत बड़ा नाटक है भगवान् का, उसके पात्र हैं। कई परिस्थिति ऐसी होती हैं। यह होता है समष्टि प्रारब्ध की वजह से कि हम केवल एक पात्र होते हैं उसमें से। जब भगवान् ने कुछ प्रकार की कोई चीज़ करनी हो..., करवानी हो, तो हम एक पात्र बन जाते हैं।

अर्जुन ने जैसे गीता में..., अर्जुन ने बोला भगवान् कृष्ण से कि कई बार न चाहते हुए भी हम कई बार पाप कार्य में प्रवृत्त हो जाते हैं, ऐसा क्यों है? और एक और बात बोली भगवान् कृष्ण ने- अर्जुन, अभी तो मैं कह रहा हूँ युद्ध कर ले। वे बोले- मैं नहीं

करुँगा। तुम नहीं भी करोगे, फिर भी तुम युद्ध कार्य में प्रवृत्त होगे क्योंकि तुम्हारे संस्कार वैसे हैं, युद्ध के।

जिस प्रकार बलपूर्वक हम खराब कार्यों में लगाए जाते हैं, उसी प्रकार बलपूर्वक हम अच्छे कार्यों में भी लगाए जाते हैं..., सत् कार्यों में। बलपूर्वक, खींच कर ले जाएँगे भगवान्, आपके संस्कार आपको। खींच कर एकदम। अच्छे कार्यों में भी भगवान्..., एकदम खींच लेंगे भगवान्..., और बुरे कार्यों में।

जब, आज से लगभग १५ वर्ष पहले हमने जाना शुरु किया था मंदिर इत्यादि, तो हम सोचते थे कभी भी एकादशी नहीं रखेंगे। "अरे! हम थोड़ी न एकादशी रख सकते हैं", ऐसी बात सोचते थे। "'एकादशी'... कैसी बात कर रहे हो!" तो बलपूर्वक संस्कार आपको खींच लेते हैं, और आप खींचे चले आते हैं। कई बार आप देखते हैं हिरण्यकशिपु है, उसके घर में प्रहलाद है, वो संस्कार ऐसे हैं भक्ति करने के, कहाँ पर हिरण्यकशिपु, उसके opposite प्रहलाद। तो संस्कार खींच लेते हैं, चाहे आपके पति कुछ चाहें, चाहे आपके माँ-बाप कुछ चाहें, चाहे आपकी बहन कुछ चाहे, वो भाई कुछ चाहे, वो कुछ matter नहीं करेगा। यह समझना होगा।

हिंदुओं की तरह आत्मा के बारे में बोलना नहीं है केवल। उसी प्रकार यह समझना होगा, हमारे संस्कार जो हैं उसी के अनुसार..., कर्म जो हैं, उसी के अनुसार हमारा शरीर बन चुका है। इसकी सारी major घटनाएँ जो हैं, वो pre destined हैं। Pre destined! किसी को या तो heart problem होगी या तो नहीं होगी। बस। ऐसा नहीं है कि जो बहुत अच्छी तरह ध्यान रखेगा उसको नहीं होगी। बहुत अच्छी तरह रखने के बाद भी होगी। कई बारी व्यक्ति casually ध्यान नहीं रखेगा, उसको तब भी नहीं होगी। Either it is there or it is not there. Eye problem, ऐसा नहीं है की संसार में सबको होगी। या तो होगी या तो नहीं होगी।

इस बात पर बहुत meditate करना पड़ेगा practically इन चीज़ों को जीना चाहते हैं न..., ये सुनने में बहुत simple बात लग रही है। Believe me जब meditate करेंगे, तब जीवन के रहस्यों को समझ पाएँगे। तब जीवन जीना बहुत ही सरल हो जाएगा। हम जीवन को समझ पाएँगे, खुद को समझ पाएँगे, अन्यों को समझ पाएँगे।

हम तो यह चाहते हैं- "मेरे अनुसार दूसरा चले।" अरे भाई! वो अपने संस्कारों अनुसार बलपूर्वक चलेगा, बलपूर्वक! तुम्हारे क्या, किसी के अनुसार भी नहीं चल सकता कोई। उसके जो कर्म... संस्कार हैं उसके, खीं...च कर कराएँगे कार्य।

सामान्यतः... ध्यान दीजिए, सामान्यतः जो कर्म करते हैं, हमारे पास free will रहता है कि जैसे मन में खराब विचार भी आ रहे हैं और शास्त्र और गुरु की भी बात हमें

मालूम है, तो हम गुरु की बात को... वासनाएँ, जो संस्कार है, वो कभी बुद्धि को over power नहीं कर सकते। बुद्धि चाहे तो उसको स्वीकार न करे। बुद्धि over power कर दे। बुद्धि क्या है? भगवत् बुद्धि, शास्त्र। इसलिए सत्संग चाहिए, हमें हमेशा पता हो क्या करणीय है। शास्त्रों में हमेशा एक-एक चीज़ नहीं पढ़ सकते, समझ सकते, तो सत्संग के द्वारा हमें हमेशा मालूम चलता रहेगा।

यदि हम... अब भगवद् धाम कैसे जाया जाता है, वो भी हम समझ लें। जब हम भक्ति करते हैं तो हमारे सारे जो कर्म हैं संचित, store house में, वो सब भस्म हो जाते हैं। और जब ये प्रारब्ध के अनुसार शरीर खत्म हुआ तो अंतिम श्वास में भगवान् हैं, तो कहाँ जाएँगे? कुछ कर्म है ही नहीं बाकी बचा। This is Science... भक्ति करते हैं, all संचित, ज्ञान अग्नि से..., भक्ति की अग्नि से सब जल जाते हैं।

जैसे मैं अभी बात कर रहा था कि सामान्यतः हमारे पास दिमाग और वासनाओं के बीच में रहता है और फिर हम शास्त्रीय बात को choose कर सकते हैं, आराम से win over कर सकते हैं। ध्यान दीजिएगा -- सामान्यतः। परंतु..., परंतु जब बहुत पापमय कर्म का, काम्य फल का हमें भुगतान करना होता है, तो क्या होता है उस समय?

"विनाश काले विपरीत बुद्धि"

जब अत्यंत पापमय कार्य, पाप कर्म होते हैं, उस समय..., भ्रमित किसको करना है? बुद्धि को। बुद्धि... एक बात, पाप हमेशा एक कार्य करेंगे - गुरु, साधु, शास्त्र - इनसे विश्वास उठा देंगे, बस ! अत्यंत पापमय कर्म का यही कार्य है। गलत decision बलपूर्वक हो जाता है। बलपूर्वक। *विनाश काले विपरीत बुद्धि।*

और गीता में क्या बताया गया है बुद्धि के सम्बन्ध में? इस सम्बन्ध में कौन बोलेगा?

"क्रोधाद् भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृति विभ्रमः।
स्मृति भ्रंशाद् बुद्धि नाशो बुद्धि नाशात् प्रणश्यति।।"

(गीता-२.६३)

विनाश काले विपरीत बुद्धि। बुद्धि नाशात् प्रणश्यति। हो गया पतन। विनाश का काल मतलब जब अत्यंत पापमय कर्म हमारे सिर पर हावी हो जाते हैं, बुद्धि को भ्रमित कर देते हैं। एक चीज़ को अगर व्यक्ति पकड़ कर बैठ जाए कि मैं ये साधुसंग से नहीं हिलूँगा, उसको कोई..., कोई कर्म कुछ नहीं हिला सकता। सही साधुसंग में रहना है, बस और कुछ नहीं करना।

ये जो प्रेम है..., प्रेम को 'पंचम पुरुषार्थ' कहा गया है। प्रेम जो है, केवल अपनी साधना से नहीं मिलता। यह तो जो भगवत् रसिक संत हैं, उनकी कृपा से ही मिलता है। होता actually क्या है कि जो भक्तों के हृदय के अन्दर प्रेम का समुद्र हमेशा रहता है, पर वो हिल्लौरे कभी-कभी खाता है। तो यदि हम उस संग में रह जाएँगे, तो जब हिल्लौरे खाएँगे, तो हम भीग जाएँगे। और ये जो हिल्लौरे खाता है, वो भी भगवद् इच्छा से खाता है। ध्यान... ध्यान दीजिए एक-एक बात पर - जो भगवद् प्रेम है, संत के हृदय में वो हिल्लौरे भी भगवद् इच्छा से खाता है।

जैसे महाप्रभु ने सन्यास लिया तो वे जाने को हुए, तो सब लोग रो-रो कर, नवद्वीपवासी बुरा हाल हो गया सबका। रो-रो कर, पिचकारियाँ निकल रही हैं, आँसू, इतना रो रहे हैं..., पूरा भीगे जा रहे हैं। और देखा जाए तो अद्वैताचार्य, उनके एक आँसू भी नहीं निकला। एक आँसू ! विश्वास हो रहा है आपको? एक आँसू नहीं निकला उनका। सब रो रहे हैं, a to z, except अद्वैताचार्य। क्यों? वे भक्त नहीं हैं? *महाविष्णवे धीमहि...* । भगवद् इच्छा से। उन्होंने, अद्वैताचार्य ने बोला... अद्वैताचार्य कौन हैं? जिन्होंने कितने वर्ष पूजा किया तुलसी, गंगाजल से और शालीग्राम जी का और बोला कि भगवान् आप आएँ, तो अद्वैताचार्य की पुकार से गौरांग महाप्रभु आए और वे ही नहीं रो रहे हैं। जिसको प्रेम होगा, उसको सन्यास कोई लेगा तो रोएँगे। तो, उन्होंने महाप्रभु को बोला, "महाप्रभु, इससे पाषाण हृदय भी आपने देखा है किसी का?" स्पष्ट बोला। "सब रो रहे हैं, मैं नहीं रो रहा केवल।"

महाप्रभु ने बोला - "मैंने किसी एक को तो रखना था, जो न रोता और सबको संभालता, तो इसलिए मैंने तुमको रखा। इसलिए मैंने तुम्हारे लंगोट में दो गांठ बांध दी थी। ये देखो।" भगवान् गांठ खोलने को बोलते हैं, गांठ खुलती है और धड़ा-धड़ रोना शुरु, पूरा भीग जाते हैं प्रेम-अश्रु में। तो, ये जो प्रेम का समुद्र है, ये भगवद् इच्छा से हिल्लौरे खाता है।

अगर हम सही सत्संग में रह गए तो हमारा कल्याण सुनिश्चित है; इसमें कोई संदेह ही नहीं है। बस हमें उस train में बैठे रहना है। यह विश्वास हमें हो जाए कि हाँ, कि हाँ यह train ठीक है यह destination तक पहुँचा..., पर उसमें बैठे रहे तो अपने आप हिलौरे खाकर हम लोग भी inundated हो जाएँगे। Because ocean of love is there anyway in the heart !

पर वास्तव में एक बात सच है कि हमें मालूम नहीं है कि हमारे साथ कौन व्यक्ति बैठा हुआ है। तभी हम सही रूप से लाभान्वित नहीं हो पाते। Fact है। ये भगवद् कृपा हो, तो हम इस बात को समझ पाएँगे।

मैं सोच रहा था इस श्लोक के ऊपर और तब realise कर रहा था कुछ -

"मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्वतः।।"

(गीता-७.३)

और

"बहूनां जन्मनामन्ते, ज्ञानवान्मां प्रपद्यते।
वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः।।"

(गीता-७.१९)

बहुत जन्मों के बाद जिसे वास्तव में ज्ञान होता है वह मेरी शरण में आता है, ऐसा महात्मा अत्यंत दुर्लभ है; ये तो विष्णु के भक्त की बात करी जा रही है, ठीक है? विष्णु...

प्रबोधानंद सरस्वती वृन्दावन महिमामृत में बताते हैं कि ---

जो जन्म-मृत्यु के चक्कर से बाहर आना चाहता है,
वह बहुत ही प्रशंसनीय व्यक्ति है..., बहुत आदरणीय व्यक्ति है।
उससे भी आदरणीय वह है जो विष्णु का परम भक्त है।
उनसें भी आदरणीय वह है जो श्री कृष्ण का परम भक्त है।

श्रीकृष्ण में भी अलग-अलग प्रकार के भक्त हैं ---

जो रुकमणि कृष्ण का भक्त हो वह और भी आदरणीय है।
उसके बाद, जो गोपालकृष्ण का भक्त हो वह और भी आदरणीय है।
सख्य..., रक्तक-पत्रक फिर सख्य...
और फिर जो यशोदा कृष्ण का भक्त हो वह और भी आदरणीय है।
और उसके बाद यदि कोई माधुर्य भाव में कोई भक्त हो,
वह उससे भी ऊँचा है और उससे भी आदरणीय है - जो माधुर्यभाव में हो।

और उन सबके भी शिरोमोर... सर्वोत्तम स्थिति में हैं -
जिनके स्वप्न में, जाग्रति में राधारानी के सिवा और कुछ भी न हो;
जो राधारानी का भक्त हो, वह सर्वोत्तम स्थिति में है।
मंजरियाँ जो हैं वे सर्वोत्तम स्थिति में हैं।

और अगर एक स्थान पर ऐसे कुछ हो संत, at the end they will become mañjarī, you can imagine our fortune to be in such association...

बड़े से बड़े जो विघ्न आते हैं भक्ति में, वो केवल संतों के आर्शीवाद से ही जा सकते हैं; भगवान् के, संतों के आर्शीवाद से ही जा सकते हैं।

और कभी भी हमें..,

हम अपना कार्य गृहस्थी करें...
business में जो करते हैं उससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता।
वो कोई कभी भी बाधक नहीं है भक्ति में,
इस बात को हमेशा बाँध लें।
Housewife होना, businessman होना, student होने,
इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता।

What matters is - आपका मन कहाँ है?
मन को लीला में लगा कर रखना होगा।

उसके बाद प्रारब्ध खत्म, आपका मन जहाँ है वहाँ पहुँच जाओगे। मन लीला में है, तो अब आप वहाँ पहुँच जाओगे। **लीला में मन लगाने से ही होगा और परिश्रमपूर्वक लगाना होगा।** मन लगाते ही यहाँ से सब मन हट जाएगा और अंतिम में जब अप्राकृत वस्तु का चिंतन होगा, तो प्राकृत जन्म क्यों मिलेगा?

आपको सरल-सरल उपाय बताता हूँ, कैसे मन लगाना है।

जैसे और कुछ समझ नहीं आ रहा, simple सी बात सोचिए -

कृष्ण ब्रज में हैं, अपने घर में नंदबाबा के यहाँ। कृष्ण गोशाला में वेणु बजा रहे हैं और साथ में जैसे ही बजा रहे हैं, तो गाय भाग रही हैं। पूँछ उठा कर इधर-उधर भाग रही हैं। कई जो नन्द बाबा के जो सेवक हैं, वे दूध दोह रहे हैं और जो वेणु जब बजा रहे हैं श्रीकृष्ण, साथ-साथ में राधारानी को देखने की चेष्टा करे जा रहे हैं, अलग-अलग प्रकार से बस।

आप रोज़ इस लीला का चिंतन करें कि ऐसा हो रहा है। आपको इसी लीला का चिंतन का अभ्यास करते-करते, आश्चर्य हो जाएँगे आप इस लीला में आपको नई-नई अनुभूतियाँ होनी शुरु हो जाएँगी, सिर्फ इतनी छोटी सी लीला के अंदर। नई-नई अनुभूतियाँ होनी शुरु हो जाएँगी; इतनी clarification होना शुरु हो जाएगा। सब कुछ और clear से clear से clear ! लगेगा ही नहीं लीला चिंतन कर रहा हूँ, लगेगा मैं वहीं हूँ। अभ्यास करके करना होगा बस। छोटा सा ही है सिर्फ़ - भगवान् वेणु बजा

रहे हैं, दूध दोह रहे हैं, गाय भाग रही हैं और वे राधारानी को देखने की चेष्टा कर रहे हैं बस। दिन-रात... रोज़ करें इसका चिंतन। रोज़!

और..., और कैसे कर सकते हैं?

और सुबह-सुबह around ६:३०-६:४५ कुंदलता भाभी जावट आती हैं राधारानी को बुलाने..., निमंत्रण देने माँ यशोदा का और कहती हैं कि, "आओ, श्रीकृष्ण के लिए कुछ व्यंजन बनाओ।" तो श्रीकृष्ण... सखियों के साथ और मेरे साथ, मैं मंजरी, मेरे साथ चल रही हैं, घूँघट ओढ़ कर और कुंदलता साथ चल रही हैं। और मैं पीछे पानी का jug लेकर..., जलझारी लेकर चल रही हूँ। और चलते-चलते-चलते क्या देख रही हूँ, कि सखियों के साथ, राधारानी कृष्ण कथा में एकदम मग्न हैं..., एकदम डूब रही हैं। और कृष्ण की.., अपने प्रेमी के बारे में सुन कर, कितना अच्छा लगता है हृदय में। तो वो राधारानी को जो आनंद की अनुभूति हो रही है, वो मुझे भी हो रही है क्योंकि राधारानी और मंजरियाँ भी..., भाव एक है! भाव तादात्मय की वजह से जो राधारानी को अनुभूति हो रही है... श्रीकृष्ण रस का विग्रह हैं, उनकी कथा रस का विग्रह है, तो जो अनुभूति राधारानी को हो रही होती है, वही अनुभूति मंजरी के हृदय में भी होती है; ये हमें feel करना है कि मैं उनके साथ पीछे चल रही हूँ, मुझे भी वही अनुभूति हो रही है। और राधारानी चलते-चलते कभी स्खलित भी हो रही हैं क्योंकि उन्हें पता ही नहीं चल रहा वे कहाँ जा रही हैं। थोड़ी और आगे चलती हैं, तो अपना घूंघट जो है..., गाँव तक होती हैं तो घूंघट रखती हैं, गाँव..., गाँव के बाहर जाते ही घूंघट हटा लेती हैं। और बिल्कुल सारा पथ जो है आलोकित हो जाता है उनकी कांति से, उनकी आलौकिक दिव्य कांति से।

राधारानी की कांति को तो छोड़ो; जो ब्रज की जो ज़मीन है, वहाँ की कांति ऐसी होती है कि जावट से लेकर बरसाने तक जाती है, इतनी ज़्यादा कांति होती है ज़मीन की। जब ज़मीन की कांति है, तो सोचो विष्णु की कांति कैसी होती होगी? कांति means effulgence. Effulgence ! और जब विष्णु की कांति है, तो कृष्ण की कांति कैसी होती होगी? कृष्ण की कांति को लावण्य, इसे लावण्य कहते हैं; "लावण्य सार" बोला जाता है कृष्ण को। और कृष्ण भी आश्चर्यचकित हो जाते हैं राधारानी के लावण्य को देखकर। लावण्यसिंधु..., लावण्यसिंधु, राधारानी को देखकर वे आश्चर्यचकित हो जाते हैं। तो ऐसी राधारानी हैं, जहाँ जाती हैं पूरा आलोकित हो जाता है। जब राधाकुण्ड होता है बिना राधारानी के, तो अलग प्रकार का दिखता है; जब राधारानी आ जाती हैं, तो बिल्कुल अलग प्रकार का हो जाता है, उनके लावण्य मात्र से।

तो, ऐसे राधारानी जा रही हैं, तो एकदम से घूंघट हटाती हैं और फिर एकदम चारों ओर आलोकित हो जाता है सब कुछ। और चले जा रही हैं..., चले जा रही हैं, कथा

हो रही है। ऐसे लगता है.., क्योंकि गोपियाँ जो हैं सभी बहुत सुंदर हैं, ऐसे लगता है कि चंद्रमुखी, चंद्रमाओं का बाज़ार चल रहा हो एक साथ; सोचिए चन्द्रमाओं का बाज़ार एक साथ चल रहा है, हम साथ में चल रही हैं। चले जा रहे हैं, रसकथा में मग्न हैं, आनंद में विवश हैं राधारानी और बिल्कुल भूल ही जाती हैं - मैं कहाँ जा रही हूँ? क्या कर रही हूँ? बिल्कुल भूल जाती हैं। अपने हृदय के पट के अंदर अपने प्रियतम की माधुरी का निरंतर अनुभूति करते जा रही होती हैं। और हमारे मन में as a साधक यही भावना होनी चाहिए की मुझे राधारानी के दर्शन कब होंगे, जब राधारानी हृदय में अपने प्रियतम का अनुभव कर रही हैं और वही अनुभव मैं भी कर पा रही हूँ और राधारानी के साथ-साथ दर्शन भी कर पा रही हूँ।

तो, ये हमें प्रर्थना करनी चाहिए जप करते हुए, लीला चिंतन करते हुए, कि चलते-चलते-चलते कभी स्खलित हो रही हैं और कुंदलता से बातें कर रही हैं। और राधारानी के मन में एक बहुत ही उल्लास है, किस बात का उल्लास है? कि मैं मेरे प्रियमत की सेवा खुद करुँगी। खुद करुँगी! इस बात की जो उनके अंदर खुशी है, वो उनके चेहरे को और मधुर बनाए जा रही है, कि मैं करुँगी। बोलते हैं न कि मैं अपनी बेटी को खुद serve करुँगी। उसी प्रकार से जैसे नन्द-यशोदा सबसे बड़े व्यक्ति हैं ब्रज में और फिर भी यशोदा माता जब खुद दही बनाती हैं, खुद मक्खन बनाती हैं। उसी प्रकार से नन्द बाबा खुद गाय का दूध निकालते हैं अपने पुत्र के लिए। नन्द..., उनकी लाखों गईयाँ हैं, उनके अनेकों सेवक हैं..., खुद करते हैं। उसी प्रकार से राधारानी खुद service करती हैं। तो, प्रेम का मतलब ही यह है - हम खुद service करने की हमारी तीव्र इच्छा हो।

तो हमें यह meditate करना है कि इस प्रकार से चल रहे हैं। आगे का scene नहीं करेंगे क्योंकि बहुत लम्बा होगा। छोटे-छोटे को धीरे-धीरे करें, तो आगे चल कर फिर करेंगे। बहुत ही अंदर तीव्र इच्छा है राधारानी की श्रीकृष्ण के दर्शन करने की। श्रीकृष्ण को अपने दर्शन देने की; इस प्रकार... वो आगे का है फिर, वो किसी और दिन चर्चा करेंगे।

बात यह है कि मन को लीला में किस तरह लगाना है। तो, कैसे लगाना है, मैं कुछ तरीके..., आपको दो तरीके बताता हूँ। कोई बोले मेरे अंदर काम-विकार उत्पन्न होता हैं। इसमें क्या काम विकार होगा? आप तो राधारानी के साथ जा रहे हो केवल भोजन बनाने के लिए। नन्दगाँव जा रहे हो, जावट से या बरसाने से।

तो किसी लीला में अपने मन को डुबाएँ। और कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि मैं तो अभी उपयुक्त नहीं हूँ..., मुझे दर्शन कब होंगे। ऐसा नहीं है।

एक बार एक भक्त थे, वे पूरे भारत में घूमते रहे कि श्रीकृष्ण का साक्षात् कुछ अनुभव हो, कुछ अनुभूति हो, तो उन्हें कोई अनुभूति नहीं हुई। उन्होंने दृढ़ विश्वास से प्रार्थना करी - "गिरिराज मैं आपके यहाँ पर आ रहा हूँ ब्रज में, मुझे कुछ तो अनुभूति कराना।" उस दिन हुआ क्या कि एकादशी का दिन था..., भूखे थे, तो क्या करें, कुछ था नहीं। तो, अचानक बाबा के पास एक लड़का आया, बोला - "बाबा, तुमने फलाहार रखा है, यह मेरी माँ है वो..., वो भी एकादशी रखती है, तुम कुछ खाना..., कुछ भोजन ग्रहण कर लो।" वो वहाँ चले गए, तो भोजन ग्रहण कर लिया। उसके बाद बूढ़ी औरत थी, उनको बोला - "आपका बहुत-बहुत धन्यवाद आपने अपने बेटे को भेज कर मुझे बुला लिया और मुझे भोजन करा दिया।" तो बूढ़ी मईया बोलती हैं - "कौन बेटा? मेरा तो कोई बेटा नहीं है..., मैंने तो किसी को नहीं भेजा। तुम अतिथि थे..., तुम आए तो मैंने सत्कार कर दिया बस।"

तो, उनका हुआ कि कृष्ण किसी भी रूप में आ सकते हैं। तो, हमें कभी भी यह नहीं सोचना चाहिए कि मैं fit हूँ, नहीं हूँ। भगवान् कभी भी करुणावश कर सकते हैं।

शुद्ध भक्ति के लक्षण में एक आता है कि भगवान् की कृपा पर हमेशा विश्वास - आशाबंधन। आशा कि भगवान् मुझ पर कृपा करें और मुझे दर्शन दें। देंगे ही देंगे, किसी भी अवस्था में। तो हमें याद रखना चाहिए कभी भी जा रहे हो, कहीं भी जा रहे हो, तो मुझे दर्शन प्राप्त हो सकते हैं।

These are initial days... तो actually, जो पाप कर्म होते हैं... देखिए **यहाँ से वहाँ का रास्ता जो है, सब श्रद्धा का ही रास्ता है।** श्रद्धा - साधुसंग - भजन क्रिया - रुचि - आसक्ति - भाव - प्रेम सब महाभाव तक, सब श्रद्धा का ही स्तर है different. तो, **जब पापकर्म होते हैं, वो किसको हिलाते हैं? श्रद्धा को हिला देते हैं।** इसी को अगर आप प्रार्थना को याद करेंगे, आपको सब कुछ समझ आ जाएगा-

"स्वल्पपुण्यवतां राजन् विश्वासो नैव जायते"

विश्वास ही नहीं होता। कब नहीं होता विश्वास? जब *सवल्प पुण्य* होते हैं..., जब कम spiritual merit रह जाते हैं। जब पापकर्म ज़्यादा होगा, तो क्या कम होगा? Spiritual merit... फिर क्या होगा? *विश्वासो नैव जायते,* गुरु पर विश्वास नहीं, शास्त्र में विश्वास नहीं, साधु पर विश्वास नहीं। Spiritual merit **गया, विश्वास गया; भक्ति खत्म।** हमने कितनी बारी बोला हुआ है *स्वल्पपुण्यवतां राजन्, विश्वासो नैव जायते;* बाबा इसका मतलब क्या है? किस पर विश्वास नहीं होता? ब्राह्मण... प्रसाद *महाप्रसादे गोविंदे नाम ब्राह्मणे वैष्णवे;* इन पर किसी पर भी विश्वास नहीं होगा, जब बलपूर्वक पाप होंगे।

वास्तव में जब हम भक्ति करते हैं, तो हमारे कई पाप जो कर्म होते हैं वो भगवान् की कृपा से, भक्ति महारानी की कृपा से, संतों की, गुरु की, वैष्णवों की कृपा से वो चले जाते हैं, हमें पता भी नहीं चलता। मालूम है? कभी हमारे साथ काफ़ी चीज़ें खराब होनी होती हैं, परंतु भक्ति महारानी..., गुरु-वैष्णवों की कृपा से वो चले जाते हैं; होते ही नहीं हैं, तो पता कैसे चलेगा? कई बारी, मैं कई संतों..., मेरी बात..., वो, पाप होते है न जो परेशान करेंगे, वो खींच कर निकाल देते हैं; इतना शक्ति भी होती है खींच कर बाहर निकाल देते हैं।

तो, प्रारब्ध में वैसे तो कोई बदलाव नहीं हो पाता परंतु प्रबल हस्तक्षेप से किसी समर्थ व्यक्ति के, बदलाव संभव है। समझ रहे हैं? हस्तक्षेप समझते हैं? Interference ! प्रबल समर्थ व्यक्ति ने interfere कर लिया, किसी ने पंगा ले लिया - "This is my person..., I will save this person." तो हम...

पापकर्म तो... देखिए सबका जन्म है, तो उग्र पाप हैं कई। तो, जो मेरा practical अनुभूति है, जब उग्र पाप होते हैं, तो दो-एक साल के लिए व्यक्ति का एकदम खराब करते हैं। अगर वैष्णव, गुरु-वैष्णव पर विश्वास रह जाए, तो उनकी कृपा से वो period भी cross हो सकता है। हाँ प्रबल हस्तक्षेप। वो कब-कब होगा? जब..., जो संत है, वो हृदय से प्रसन्न होगा उस व्यक्ति से, तो तो करेगा न हस्तक्षेप। हस्तक्षेप हर समय तो नहीं होता। ऐसा तो नहीं होगा, हर समय हस्तक्षेप ही चल रहा हो; फिर तो कर्म का कोई महत्व ही नहीं रह जाता। सामान्यतः हस्तक्षेप नहीं हो पाता, क्यों? क्योंकि श्रद्धा ही हिल जाती है। हमारी बस श्रद्धा रहे..., उस संग में हम रह लें, तो जब प्रेमसमुद्र आए हिल्लौरे खाएँगे, हमारा हर प्रकार से हम कृतार्थ हो जाएँगे।

कई बार बहुत पिछले जन्म के काफ़ी उग्र कर्म होते हैं पाप, जैसे - गाय को मारना या किसी के साथ संबंध स्थापित कर के उसे छोड़ देना, विवाह न करना; काफी गलत कार्य है न और वो व्यक्ति अगर मान लो ब्राह्मणी हो, तो और ऊपर से गलत कार्य। तो, कई बार प्रचुर मात्रा में धोखा देना, cheating करना, इस प्रकार के बहुत गलत कार्य अगर हमने करे हुए हों, तो फिर उसका उस हिसाब से फिर दंड भी मिलता है। पर भगवान् की कृपा होती है कि एक-दो वर्ष कई बार होते हैं वो tough रहते हैं और फिर वापस व्यक्ति उसी पथ में आता है, जिस पथ से वो च्युत हुआ था।

सबके जीवन में इस प्रकार के कभी भी समय आ सकता है। तो, कभी भी हमें भक्तों के संग को lightly नहीं लेना चाहिए। और यह हमें मालूम होना चाहिए कि हम किन... अगर इन संतों के द्वारा इतना बहुत विशेष कोई कार्य होना हो, तो फिर हमें सोचना चाहिए कि लाभ भी उतना ही होगा और नुकसान भी उतना ही होगा।

अपराध करेंगे तो नुकसान भी उतना होगा और proper यदि हम जुड़े रहेंगे, तो लाभ भी हमारा उतना ही होगा। Dealing in crores only!

इस संबंध में किसी का कोई प्रश्न है, तो पूछ सकते हैं।